P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद प्रादुर्भूत जन–राज्य

Emergence of People's State After The Fall of Maurya Empire

Paper Submission: 15/05/2021, Date of Acceptance: 23/05/2021, Date of Publication: 24/05/2021

प्रताप विजय कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,
हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
खलीलाबाद, संत कबीर नगर
उ0प्र0, भारत

प्राचीन भारतीय बौद्ध एवं जैन साहित्य के सम्यक अनुशीलन से यह तथ्य प्रमाणित है कि भारत में पुरातन काल से गणतंत्रात्मक शासन का चलन था। वैदिक साहित्य में भी वैराज्य तथा द्वैराज्य राज्यों का उल्लेख मिलता है। वैराज्य में समस्त प्रजागण स्वयं शासन संचालित करता था। निरूक्त में यास्क ने वैराज्य के सन्दर्भ में लिखा है कि '' विगत राजकं वैराज्यं'' अर्थात राजा रहित राज्य। इस प्रकार वैराज्य विशुद्ध जनतंत्रात्मक राज्य थे, और द्वैराज्य अर्थात ऐसा राज्य जहॉ दो राजा हों। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में दो प्रकार के संघों का उल्लेख है, प्रथम वार्ता शस्त्रोपजीविनः अर्थात जो कृषि पशु–पालन तथा युद्ध पर आश्रित थे। और द्वितीय राज शब्दोपजीविवः हैं। प्रथम में कम्बोज तथा सुराष्ट्र के साथ क्षत्रियों का सम्बन्ध बताया गया है, और दूसरे में लिच्छवि, वज्जि, मल्ल, मद्र, कुकुर, पांचाल की गणना की गयी है। डॉ. डी0सी0 सरकार ने दूसरे को गणतंत्रात्मक माना है। अष्टाध्यायी में भी संघ राज्यों को राजाधीन राज्यों से पृथक बताया गया है। महाभारत में भी गणतंत्रात्मक राज्यों का उल्लेख प्राप्त है। बुद्ध के काल में कपिलवस्तु के शाक्यों, वैशाली के लिच्छवियों के सशक्त गणराज्यों के साथ ही शिशुमारगिरि के भग्गों, अलकप्प के बुलीयों, केसपुत्त के कलामों, रामग्राम के कोलियों और कुशीनारा के पृथक–पृथक मल्लों, पिप्पलिवन के मोरियों तथा मिथिला के विदेहों का गण राज्य विद्यमान था। जिसका विशद अध्ययन सर्वप्रथम रीज डैविड्स ने अपनी पुस्तक 'बुद्धिस्ट इण्डिया' में किया है।

छठी शदी ई0पू0 में गणतंत्रों की स्थिति अत्यंत सुदृढ दिखती है। किन्तु राजतंत्रों की साम्राज्यवादी नीति ने गणतंत्रों के अस्तित्व को संकट में डाल दिया। इस प्रकार वास्तव में राजतंत्रात्मक राज्यों का उदय और उनका विकास गणतंत्रों के लिए बड़ी चुनौती सिद्ध हुए। प्रारम्भ में जब राजतंत्रात्मक राज्य पृथक–पृथक थे, तब गणराज्यों को अपना अस्तित्व बनाये रखने में कठिनाई नही थी। परन्तु छठी शदी ई0पू0 के उत्तरार्द्ध में जब मगध, कोशल, वत्स, और अवन्ति राजतंत्र शक्तिशाली हुए तो गणतंत्रों का अस्तित्व संकट में पड़ गया, और मगध के उत्कर्ष के पश्चात् मौर्य साम्राज्य के साम्राज्यवादी नीति और कौटिल्य के साम्राज्यिक सिद्धान्त ने गणराज्यों के अस्तित्व बनाये रखने का किंचित संभावना भी समाप्त कर दिया। कई प्रकार के अवलम्वन का सहारा कौटिल्य ने इस महान आदर्श हेतु लिया, कि उसका स्वामी समस्त संघों का एक मात्र राजा रहे,। इसमें काफी हद तक वह सफल रहा, क्योंकि मौर्य काल में इन शक्तिशाली संघों के अस्तित्व का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं प्राप्त है।

किन्तु इन शक्तिशाली संघों की आधारभूत संघ भावना की जड़े इतनी गहरी थी कि किसी सम्राट की नीति से उनका समूल उन्मूलन असंभव था। यही कारण है कि मौर्य सम्राज्य के पतन के पश्चात इन संघों ने पुनः सिर उठाया, और कुछ ही समय में यौधेयों, मालवों, वृष्णियों, आर्जुनायनों, औदुम्बरों तथा कुणिन्दों जैसे संघों ने अपनी संघ प्रतिष्ठा स्थापित कर ली, जिसका सम्यक अध्ययन यहॉ प्रस्तुत हैं।

Due study of ancient Indian Buddhist and Jain literature proves the fact that republican rule was prevalent in India since ancient times. The mention of Vairagya and Dvairajya states is also found in the Vedic literature. In Vairaja, all the subjects themselves governed.

After the fall of the Maurya Empire, the Sanghas again raised their heads, and within a short time, Sanghas such as the Yaudheyas, Malavas, Vrishnis, Arjunayans, Audumbaras and Kunindas established their sangha prestige, whose due study is presented here.

मुख्य शब्द : जनराज्य, संघराज्य, वैराज्य, द्वैराज्य, वार्ताशस्त्रोपजीविनः, राजशब्दोपजीविनः, यौधेय, आर्जुनायन, औदुम्बर।
Janrajya, Union Rajya, Vairajaya, Dvarajya, Vartashastropjivinah, Rajashabdopajivinah, Yaudheya, Arjunayan, Audumbar.

प्रस्तावना

मौर्य साम्राज्य के साम्राज्यवादी नीति से राजनीतिक संघों का विनाश हुआ। मौर्यो के पतन के बाद राजनीतिक विचारों के नवीन सम्प्रदाय के उदय ने गणपद्धति शासन व्यवस्था को पुनजीर्वित होने का सुअवसर प्रदान किया। कौटिलीय अर्थशास्त्र जो एक मौर्य युगीन रचना है, इसमें अराजक राज्यों के सन्दर्भ में एक विवरण उल्लिखित हैं। अर्थशास्त्र के एक सम्पूर्ण अध्याय (अधिकरण II अध्याय I) में संघों पर विचार करते हुए उनके दो वर्ग निर्दिष्ट है :–

1– वार्ताशस्त्रोपजीविनः

2– राजशब्दोपजीविनः[1]

''कम्बोज–सुराष्ट्र–क्षत्रिय श्रेण्यादयो वार्ताशस्त्रोपजीविनः लिच्छविक –वृजिक –मल्लक –मद्रक–कुकुर–कुरू–पाञ्चालदयो राजशब्दोपजीविनः।''

प्रथम वर्ग में उन क्षत्रिय श्रेणियों का समावेश था जो व्यापार–वाणिज्य –कृषि अर्थात वार्ता के साथ सैनिक व्यवसाय का अनुशरण करती थी। अर्थशास्त्र के कई सन्दर्भो से पता चलता है कि कभी–कभी इनका स्वतंत्र अस्तित्व भी होता था।

दूसरे वर्ग में उन संघों या गणों को रखा गया है, जो राजा की पदवी या उपाधि (राजशब्द) धारण करते थे। इसके अन्तर्गत लिच्छविकों, मल्लकों, मद्रकों, कुकुरों, कुरूओं तथा पांचालों का परिगणन था। बौद्ध पालि ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि लिच्छवि 'राजा' की उपाधि का व्यवहार करते थे। कौटिलीय अर्थशास्त्र से जानकारी मिलती है कि अजातशत्रु के आक्रमण के पश्चात् भी लिच्छवियों का पूर्ण उन्मूलन नही हुआ था, अपितु उन्होने अपना अस्तित्व बनाये रखा और उनका लोकतांत्रिक संविधान तृतीय शदी ई0पू0 के प्रारम्भ तक विद्यमान था तथा मौर्य युग तक उसमें कोई परिवर्तन नही हुआ था।[2]

इस प्रकार दिखाई देता है कि कौटिल्य के साम्राज्यवाद के प्रभावशाली होते हुए भी संघ जीवित रहा। इस महान आदर्श प्राप्ति के लिए, कि उसका स्वामी समस्त संघों का एक मात्र राजा बना रहे, इसके लिए उसने अनेक विधान का सहारा लिया, और काफी हद तक सफल रहा। क्योंकि मौर्य काल में इन शक्तिशाली संघों के अस्तित्व का कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नही होता। लेकिन इसके बावजूद इनके आस्तित्व की आधारभूत संघ भावना की जड़े इतनी गहराई तक थी कि किसी सम्राट की आज्ञा से उनका उन्मूलन होना असंभव था। हम देखते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पराक्रम तथा कौटिल्य की कूटनीतिक प्रतिभा के द्वारा स्थापित मजबूत केन्द्रीभूत शासन का पराभव होने पर स्वतंत्र राजनीतिक संघों ने पुनः सिर उठाया और उनमें से कुछ शासन–सत्ता की चरम सीमा तक पहुॅचे। प्राचीन भारतीय मुद्राशास्त्र के अध्ययन से ज्ञात हेाता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त एक शताब्दी के भीतर यौधेय, मालव, वृष्णि, आर्जुनायन, औदुम्बर और कुणिन्द गण ने अपनी स्वतंत्रता स्थापित कर ली थी। यह भी दिखायी देता है कि इनमें लिच्छवियों, वृजिकों, कुरूओं और पांचालों की उपस्थिति नही दिखती, किन्तु इनका स्थान मालव, यौधेय, आर्जुनायन तथा अन्य जनों ने ले लिया था। यह वैसा ही है जैसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, परन्तु आत्मा जीवित या विद्यमान रहती है।

यह ध्यातव्य तथ्य है कि मगध के पड़ोसी गणराज्य सदैव के लिए लुप्त प्राय हो जाते हैं। इसमें एकमात्र लिच्छविगण इतिहास में पुनः प्रकट होता है, किन्तु तब वे नेपाल में एक राजसत्तात्मक शासन के अधीनस्थ थे। इस प्रकार कौटिल्य के सिद्धान्तों को जिस पूर्णता के साथ क्रियान्वित किया गया वह महत्वपूर्ण है, किन्तु कालान्तर में राजनीतिक विचारों में भी विशेष परिवर्तन हुआ, जबकि भारत कुछ शदियों तक साम्राज्यवाद का अभ्यस्थ हो चुका था, तब कौटिल्य की रचनाओं को प्रेरित करने वाले विचार असामयिक प्रतीत हुए और कौटिल्य के प्रभाव से बाहर कुछ राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ, जिन्होने गणराज्यों के समृद्धि एवं कल्याण और उनके अविच्छिन्न आस्तित्व में इतनी रूचि ली, जितना कभी कौटिल्य ने उनके विनाश और पतन में ली थी।

यद्यति प्राचीन भारत के राजनीतिक आदर्शो के सुनियोजित एवं क्रमवद्ध विकास की जानकारी प्राप्त करना एक दुरूह कार्य है, लेकिन इसके बावजूद इससे सम्बन्धित तथ्य प्राप्त करना विशिष्ट हैं। जहॉ तक स्वतंत्र राजनीतिक संघों का सम्बन्ध है, गौतम बुद्ध उनके पक्षधर दिखायी देते हैं किन्तु मगध का महत्वाकांक्षी साम्राज्यवाद उनके अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर सका तथा स्वयं बुद्ध के काल में ही हर्यक वंशीय शासक अजातशत्रु का मंत्री सबसे महत्वपूर्ण गणराज्य में से एक का उन्मूलन करने के लिए मार्ग तैयार करने लगा था। इस कार्य में उसने जिन अनैतिक पहलुओं का सहारा लेकर वज्जियों में विभेद उत्पन्न किये उसका विस्तृत वर्णन बौद्ध ग्रन्थ अट्ठकथा में मिलता है।[3] यह राजनीतिक सम्प्रदाय के विचारों का व्यवहारिक उदाहरण माना जा सकता है, जिसका व्याख्याता स्वयं कौटिल्य था। इसमें राजनयिक सिद्धान्त एवं उसका व्यवहारिक रूप दोनों साथ–साथ कार्य कर रहे थे। चन्द्रगुप्त मौर्य का ब्राह्मण महामंत्री अपने ऐसे लक्ष्य प्राप्ति के लिए मदिरा और स्त्री का उपयोग करने में भी तनिक संकोच नहीं करता था। जिसके फलस्वरूप मौर्य साम्राज्य के विस्तार के साथ इन राजनीतिक संघों का भी अन्त हो गया। मौर्यो का जहॉ प्रत्यक्ष प्रभाव था, वहॉ यह विनाश इतना पूर्ण था कि भविष्य में किसी राजनीतिक गण या संघ की चर्चा तक नही मिलती।

किन्तु जिस चेतना ने इन राजनीतिक संघों को जन्म दिया था, उसका अन्त इतना शीघ्र भी न हो सका। इनका समर्थन राजनीतिक संघों के विकास और उन्नति के पक्षधर राजनीतिक विचारों के नवीन सम्प्रदाय के उदय से हुआ, जिसके कारण मौर्य राजवंश के सुदृढ़ प्रभाव के हटते ही उनमें कुछ का पुनः आविर्भाव हुआ। कौटिलीय विचारधारा ने राजनीतिक संघों का विनाश किया। अतएव यह स्वाभाविक था कि राजनीतिक विचारों का नवीन सम्प्रदाय उन्हे पुनर्जीवन प्रदान करता। क्योंकि महाभारत[4] में किरात, दरद, औदुम्बर, पारद, वाह्लिक, शिवि, त्रिगर्त, केकय, अम्बष्ठ, क्षुद्रक, मालव, पौण्ड, अंग और वंग प्रभृत अनेक अराजक जनों का उल्लेख है, जिन्हे श्रेणीमन्त और शस्त्रधारी[5] संज्ञा से अभिहीत किया गया है। इन शब्दों की

तुलना अर्थशास्त्र के क्षत्रीय श्रेणी और अष्टाध्यायी के आयुधजीवी संघ से की जा सकती है। यह उल्लेख्य है कि उक्त जनों में से एक 'यौधेय' की गणना स्पष्ट रूप से आयुधजीवी संघ के रूप में की गयी है। जहॉ तक वाह्लिकों का प्रश्न है महाभारत में कई स्थलों पर इन्हे 'वीर राजा' कहा गया है,[6] जो अर्थशास्त्र के राजशब्दोपजीवि शब्द का और जातक ग्रन्थों में वर्णित लिच्छवियों के 'राजा' कहे जाने का स्मरण कराते हैं। महाभारत में आनर्त, कालकूट, कुलिंद, आदि जन–संगठनों की चर्चा है, यद्यपि उनके शासन पद्धति का स्पष्ट संकेत नही है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् आविर्भूत गणराज्यों के विषय में केवल महाभारत एवं अन्य साहित्यिक स्रोत के आधार पर उनके काल का विवेचन कठिन है, लेकिन इस कार्य में मुद्रा साक्ष्य का अध्ययन अवश्य मदद करता है। जिससे इन राजनीतिक संघों के अस्तित्व एवं स्वरूप का ज्ञान होता है–

यौधेय–गण

पाणिनि के काल में यह एक आयुधजीवी संघ था। यौधेयों के विषय में जानकारी मुद्रा एवं अभिलेखों पर आधारित है। कनिंघम के अनुसार यौधेयों की मुद्राएं प्रथम शदी ई0पू0 के आस–पास की है।[7] ई0जे0 रैप्सन ने भी इनका काल 100ई0पू0 निर्धारित किया है।[8] इन मुद्राओं पर 'यौधेयन' आलेख है जो आगे चलकर 'यौधेयानांगणस्य जय' में रूपान्तरित हो जाता हैं। यौधेयों की शक्ति एवं साधन सम्पन्नता की किंचित जानकारी शक–क्षत्रप शासक रूद्रदामन के जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख से मिलता है, जहॉ उल्लेख है कि –

सर्व्वक्षत्राविष्कृत वीर शब्द जातोत्सेका विधेयानां यौधेयानाम्।

अर्थात् समस्त क्षत्रियों के मध्य अपनी वीर उपाधि को व्यक्त करने के कारण दृष्ट यौधेयों को।[9]

शत्रु शासक के द्वारा की गयी यौधेयों की प्रशंसा अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यौधेयों की एक बड़ी मृण्मुद्रा पर लेख– ''यौधेयानां जयमन्त्रधराणां '' से तात्पर्य यह लगाया गया है कि उनके पास विजय श्री प्राप्त करने का मन्त्र था।[10]

गिरनार अभिलेख में रूद्रदामन अत्यंत गर्व से कहता है कि उसने यौधेयों का उन्मूलन कर दिया था। किन्तु योधेयों की मुद्राओं के आधार पर ज्ञात होता है कि इसके बाद भी वे अस्तित्वमान थें, और चतुर्थ शदी के अन्त तक वे शक्तिशाली राजनीतिक घटक के रूप में दिखायी देते हैं। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति लेख में यौधेयों का उल्लेख उन जनों में है, जिन्होंने गुप्त सम्राट् को सभी 'कर' देकर उनकी आज्ञाओं का पालन और प्रणाम किया।[11] लेकिन प्रयाग प्रशस्ति लेख से यह संकेत मिलता है कि यौधेयों का राज्य गुप्त राज्य के प्रत्यक्ष शासन में न होकर एक सीमावर्ती राज्य था, जो उनकी प्रभुता स्वीकार करने के बाद 'कर' प्रदान किया था।[12]

यौधेयों के प्रान्त का निश्चयन मुद्रा एवं अभिलेख से होता है। एक अभिलेख भरतपुर के पास विजयगढ़ से तथा मुद्राएं सहारनपुर, मुलतान, पानीपत, सोनपत, कांगड़ा, से प्राप्त हुई हैं।

मालव गण

डॉ. आर0जी0 भण्डारकर ने मत व्यक्त किया है कि पाणिनि की अष्टाध्यायी में मालवों का उल्लेख पंजाब के एक आयुधजीवी संघ के रूप में मिलता है।[13] यवन इतिहाकार इसका उल्लेख सिकन्दर द्वारा विजित ' मल्लोई जन ' से करते हैं।[14] मालवों की लगभग 600 मुद्राएं मिली हैं। इन मुद्राओं पर 'मालवाह्ण जय' 'मालवानां जय, तथा ' मालवगणस्य जय' आलेख हैं। लेकिन यह निश्चित नही है कि इन मुद्राओं के प्रवर्तक पाणिनि द्वारा उल्लिखित 'मालव' ही हैं। इन मुद्राओं के काल का निर्धारिण कनिंघम एवं कार्लाइल 250 ई0पू0 और ई0जे0 रैप्सन ने 150 ई0पू0 का किया है।[15]

लेकिन इनका काल 150 ई0पू0 के आस–पास ही समीचीन प्रतीत होता है, क्यों कि इन मुद्राओं के लेख की लिपि सम्राट अशोक के जितनी प्राचीन नही हैं। नहपान के जामाता उषवदात्त के नासिक अभिलेख में उसके द्वारा मालवों को पराजित करने का सन्दर्भ उल्लिखित है। इन लेखों में मालवों के स्थान पर ' मालय' अंकित है, जो संभवतः प्राकृत में 'य' और 'व' के परस्पर विनिमय से होता है। अतः मालव और मालय दोनों अभिन्न है।[16] ऐसा प्रतीत होता है कि यौधेयों की भॉति मालव भी शक आक्रान्ताओं के शत्रु थें, जिन्होने प्रथम शदी ई0 के अन्त में उनके समीपवर्ती प्रदेश पर आक्रमण किया तथा अपने नेता नहपान की अधीनता में एक राज्य स्थापित कर लिया। बाद के अभिलेखों में विक्रमी संवत में तिथियॉ है तथा डॉ. आर0जी0 भण्डारकर ने 'गण' शब्द को संघ का पर्यायवाची मानकर ई0पू0 58 का संवत मालवों के गण स्वातंत्र्य की स्थापना से आरम्भ हुआ स्वीकार करते हैं। या जिस प्रकार मालवों ने उस प्रदेश को अपना नाम दिया, जहॉ वे अन्तिम रूप से बस गये थे। उसी प्रकार उन्होने जिस संवत् का व्यवहार किया उसका नाम भी उन्ही के नाम पर पड़ा। चौथी शदी तक मालवगण एक राजनीतिक इकाई के रूप में दिखायी देते हैं। गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने उन्हे आपदस्त किया था।

आर्जुनायन गण

प्रथम शदी ई0पू0 के आस–पास की कतिमय मुद्राएं मिली हैं, जिनपर 'आर्जुनायन' लेख प्राप्त हैं। आर्जुनायन का उल्लेख गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में भी हुआ है। इनका भी पराभव यौधेयों की भॉति गुप्तों के द्वारा ही किया गया था। इनका उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी हुआ है।[17] मुद्राओं के प्राप्ति स्थल के अनिश्चयन से इनके राज्य का सीमांकन कठिन है। वृहत्संहिता के अनुसार यह गणराज्य यौधेयों के समीपवर्ती था।[18] प्रयाग प्रशस्ति में नामों के उल्लेख के क्रमानुसार प्रस्तुत राज्यों की स्थिति को ही स्वीकार किया गया है। जहॉ 'मालवार्जुनायनयौधेयमद्रक' का उल्लेख है। इसके आधार पर आर्जुनायनों को मालवों और यौधेयों के मध्य ही रखना पड़ेगा। इस सन्दर्भ के आधार पर आर्जुनायनों की स्थिति भरतपुर और नागर के बीच होनी चाहिए। लेकिन यह स्थिति विजयगढ़ पाषाण–लेख के साथ समीचीन नहीं बैठता। प्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ इनका मूल राज्य भरतपुर और अलवर के भू–भाग को स्वीकार करते है।[19]

औदुम्बर–गण

पाणिनी की अष्टाध्यायी में औटुम्बर जन को 'जलंधर–जन' का निकटवर्ती बताया गया हैं। इनके सिक्के औदुम्बर नाम मुक्त ब्यास नदी के ऊपर कांगड़ा आदि क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। एकमात्र मुद्रा साक्ष्य इनकी जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं। श्री रामालदास बन्द्योपाध्याय मुद्रा की लिपि के आधार पर इन्हे प्रथम शदी ई0पू0 के निकट का माना हैं।[20] मुद्राओं के आधार पर इन्हे कांगड़ा, कुल्लू का समीपवर्ती परिच्छेत्र का स्वीकार किया है। बृहत्संहिता मार्कण्डेय पुराण एवं विष्णु पुराण में औदुम्बरों का उल्लेख त्रैयगर्तो तथा कुणिन्दों के साथ हुआ है, इसमें कपित्थलों को अम्बाला, त्रेगर्तो का कांगड़ा और कुलिन्दों को सतलज नदी के तटवर्ती माना गया है।

कुणिन्द जन

कुणिन्द जन का उल्लेख पुराणों में और महाभारत के सभा पर्व में मिलता है, जहॉ इन्द्रप्रस्थ के उत्तर में इसकी स्थिति बताई गयी है। कुणिन्द जन के चांदी और तॉबे के सिक्के बड़ी संख्या में मिले हैं। इनके सिक्के हिन्द–यवन सिक्कों से प्रभावित प्रतीत होते हैं। किन्तु सिक्कों के प्रतीक पूर्णतः भारतीय हैं। इन पर ब्राह्मी लिपि में ' राज्ञः कुनिन्दस' लेख है। पृष्ठ भाग पर मुद्रालेख खरोष्ठी लिपि में है। कनिंघम महोदय इन मुद्राओं को 150 ई0 के आस–पास का मानते है।[21] कुणिन्दों की मुद्राएं पूर्व में गंगा नदी के दक्षिण–पश्चिम में हस्तिनापुर, सहारनपुर और अम्बाला तथा हिमालय के ढालू प्रदेश के निकट से मिली हैं। जिससे इनके राज्य की स्थिति का अनुमान होता है। इसकी पुष्टि विष्णु पुराण से भी होती है, जहॉ 'कुलिन्दोपत्यकाः' अर्थात पर्वत के उपत्यका का निवसी [22] कुलिन्द उल्लिखित है। इससे स्पष्ट होता है कि कुलिन्द पर्वतोपत्यकाओं के निकट निवास करते थे।

वृष्णि जन

वृष्णि जन का उल्लेख महाभारत में हुआ है, जहॉ जरासंघ के आक्रमण से आक्रान्त होकर उनके द्वारका में बसने का सन्दर्भ है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में इनका उल्लेख अन्धक–वृष्णियुग्म के रूप में हुआ है।[23] कौटिल्य ने इनका उल्लेख संघ के रूप में किया है।[24] वृष्णि संघ का नाम केवल एक मुद्रा पर सुरक्षित है। इस पर अंकित मुद्रा लेख को कनिंघम ने– ' वृष्णिराज ज्ञागनस्य भुभरस्य' पढ़ा था।[25]

डॉ. आर0सी0 मजुमदार के अनुसार यह भुभरस्य के स्थान पर त्रतरस्य हो सकता है, और इनका समर्थन ई0जे0 रैप्सन प्रभृत विद्वानों ने भी किया है।[26] एक जनपद के रूप में वृष्णि शब्द का उल्लेख बाणभट्ट के हर्षचरित में हुआ है।[27] अक्षर रचना तथा लिपि के आधार पर इन मुद्राओं को ई0पू0 द्वितीय–प्रथम शताब्दी का माना जाता है।

षिबि–गण

ऐतिहासिक काल में शिबि का उल्लेख यवन इतिहासकारों ने सिबे या सिबोई के रूप में किया है। 1872 ई0 में कार्लायल ने चितौड़ के पास ताम्बावती नगरी नामक प्राचीन नगर का खण्डहर प्राप्त किया। यहॉ से कुछ प्राचीन मुद्राएं भी मिलीं, जिसका उल्लेख आर्क्यालाजिकल सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 6 में किया गया है। यहॉ से प्राप्त मुद्राओं के एक वर्ग पर–मझमिकायसिबिजनपदस' लेख अंकित है। याज्ञवल्क्य स्मृति 1/361 में जनपद की अभिस्वीकृति समुदाय के अर्थ में हुआ है।[28]

इस प्रकार इसका अर्थ यह हुआ मझमिका के शिबि समुदाय का। याज्ञवल्क्य स्मृति में राजा के अधीन जनपद की कल्पना है, किन्तु 'शिबि' जनपद के द्वारा मुद्राओं के प्रवर्तन से स्पष्ट होता है कि शिबि मध्यमिका के थे। पतंजलि ने महाभाष्य में इस नगर पर यवन आक्रमण का उल्लेख किया है–

अरूणद् यवनः साकेतम्, अरूणद यवनों माध्यमिकाम्।[29]

महाभारत एवं वृहत्संहिता में माध्यमिका शब्द एक 'जन' नाम के रूप में प्रयुक्त है। अक्षर–रचना, एवं लिपि के आधार पर शिबि जनपद की मुद्राओं को द्वितीय–प्रथम शदी ई0पू0 का माना जाता है।

इन विस्तृत ऐतिहासिक आलेखों, सन्दर्भो के आलोक में प्रमाणित होता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त एक शताब्दी के भीतर भारत में यौधेय, मालव, आर्जुनायन, औदुम्बर, कुणिन्द, वृष्णि और शिबि आदि राजनीतिक गणतांत्रिक संघ प्रादुर्भूत हुए।

साहित्यावलोकन

अध्येता ने अपने अध्ययन में मौरोन्तर युगीन जन– राज्यों की स्थिति के विषय में जानने के लिए छठी सदी ई. पू. के गणराज्यों का स्वरूप एवं शासन पद्धति के विषय में अवलोकन किया है। साथ ही इन गणों या जन राज्यों के पतन के कारणों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन से पता चला कि इन जन राज्यों के विनाश में इनकी शासन पद्धति के जिनके किसी भी विषय पर या आपात (युद्ध) की स्थिति में भी निर्णय करने का अधिकार संपूर्ण जन या समूह (गण) का होता था। इसके कारण महत्वपूर्ण विषय पर सकारात्मक निर्णय आने पर विलंब होता था। जिससे शत्रु पक्ष प्रभावी हो जाता था। इसके अतिरिक्त इन जनों के पतन का दूसरा पहलू राजतंत्र का प्रभावी होना थाए जिसमें निर्णय का पूरा अधिकार राजा में केंद्रित था और मंत्री परिषद राजा के सहयोगी होती थी। दूसरी तरफ मौर्य साम्राज्य को साम्राज्यवादी नीति भी इन जन राज्यों के अस्तित्व को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। प्रस्तुत अध्ययन में यह भी तत्व उपस्थित हुआ कि जन राज्यों की जड़ें इतनी गहरी थी कि साम्राज्यवादी राजतंत्रो की जड़े ज्यों कमजोर हुई। इनका प्रभाव पुनः दिखने लगा। मौर्य साम्राज्य के पतनोपरान्त जनराज्य एक बार फिर प्रादुर्भूत हुए और राजनीतिक पटल पर गणराज्यों के शासन पद्धति के अनुरूप राज्य दिखने प्रारम्भ हुए।

लेखक के अनुसार मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद प्रादुर्भूत जन–राज्य विषयक शोध पत्र के सन्दर्भ अद्यतन नवीन कार्य नही हुआ है। अतएव जितना शोध पत्र मे साक्ष्य प्रस्तुत है उसके आगे वर्तमान में तथ्य अनुपलब्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

वैदिक युगीन समाज यायावर जीवन व्यतीत करते हुए कालान्तर में कबिले, जन, विश के रूप में सन्निवेशित हुआ। उत्तर वैदिक युग में राज्य की उत्पत्ति

के बीज प्रस्फूटित हुए, और राज्याभिषेक आस्तित्व में आया। जिसका क्रियान्वयन छठी शदी ई0पू0 के राजनीतिक धरातल पर दिखायी देता है। इस समय दो प्रकार के राज्य अस्तित्वमान दिखायी देते हैं–राजतंत्र और गणतंत्र। राजतंत्रों की शासन पद्धति के अन्तर्गत 16 महाजनपद एवं गण या जन पद्धति के अन्तर्गत 10 गणराज्यों का सन्दर्भ बौद्ध एवं जैन साहित्यों में प्राप्त हैं।

गणराज्यों के शासन पद्धति में सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न सभा केन्द्रीय समिति या परिषद थी। बौद्ध जातक ग्रन्थों में लिच्छवियों के केन्द्रीय समिति में 7707 सदस्यों एवं यौधेयों की केन्द्रीय समिति में 5000 सदस्यों की सूचना मिलती है। पाश्चात्य विचारकों की प्रारम्भ में यह धारणा थी कि प्राचीन भारतीय जनमानस गणतंत्रात्मक शासन पद्धति से सर्वथा अनभिज्ञ था। परन्तु एक सम्यक अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट हो चुका है कि वैदिक साहित्यों में बैराज्य का उल्लेख जनतांत्रिक या गणतांत्रिक पद्धति का ही संकेत है, और छठी शदी ई0पू0 में गणतंत्रों के विषय में ठोस प्रमाण उपलब्ध हैं। लेकिन साम्राज्यवाद के उदय के फलस्वरूप राजतंत्रों के महत्वाकांक्षा से गणराज्यों का पतन हुआ, क्योंकि राजतंत्र में सम्पूर्ण शक्ति राजा में निहित थी, जबकि गणराज्यों की शासन व्यवस्था में किसी विषय पर निर्णय लेने के लिए अधिवेशन या सभा का निर्णय आवश्यक था। जिसके कारण किसी आपत्ति या महत्वपूर्ण निर्णय में भी विलम्ब हो जाता था। मौर्य साम्राज्य के विस्तारवादी नीति ने गणतंत्रों की मूल भावना एवं आधाभूत तत्व भारतीय संस्कृति में सदैव विद्यमान रहे और मौर्य साम्राज्य के पतनोंपरान्त पुनः गणराज्यों का स्वरूप प्रकट हुआ, जिनके विषय में सम्यक जानकारी साहित्य एवं मुद्रा साक्ष्य के आधार पर होती है। इस क्रम में यौधेय, मालव, औदुम्बर, आर्जुनायन, वृष्णि, शिबि, आदि संघों या जनों का प्रादुर्भाव भारतीय गणतांत्रिक शासन पद्धति के अनुरूप हुआ। इसके विषय में सम्यक अध्ययन एवं जानकारी के उद्देश्य से ही प्रस्तुत शोध–पत्र विषय का चयन किया गया है।

निष्कर्ष

छठी शदी ई0पू0 के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महाजनपदों एवं गणराज्यों के विषय में अध्ययन से प्राचीन भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन की सम्यक जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। इनमें गणराज्यों के विषय में अध्ययन से प्राचीन भारतीय समाज में लोकतंत्र या जनतंत्र की जड़े गहरी होने के प्रमाण मिलते हैं। यद्यपि राजतंत्र के अन्तर्गत साम्राज्यवाद के विस्तारवादी सिद्धान्त के फलस्वरूप इन गणराज्यों का उनमें विलीन होने के उपरान्त भी यदा–कदा गणतंत्रीय अवधारणा के तत्व दिखते हैं, और जैसे ही उनके लिए अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ वे प्रस्फूटित हुए। जिनके विषय में सम्यक अध्ययन के उपरान्त यह प्रकट होता

..9..

है कि छठी शदी ई0पू0 के गणराज्यों के पतन के बाद मौर्योत्तर युगीन भारत में पुनः यौधेय, मालव, औदुम्बर, आर्जुनायन, शिबि और वृष्णि आदि जन राजनीतिक पटल पर दिखने लगे और यहॉ तक कि तत्युगीन राजनीतिक धरातल पर चरमोत्कर्ष तक पहुॅचे। जिसका सम्यक अनुमान उनके सिक्कों और अभिलेखों से ही हो पाता है।

अन्त–टिप्पणी

1. *डॉ. आर0सी0 मजूमदार–प्राचीन भारत में संघटित जीवन–पृष्ठ–239।*
2. *वही–पृष्ठ–241*
3. *जर्नल ऑफ एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, जिल्द–7 पृष्ठ–994।*
4. *महाभारत, शान्ति पर्व, अध्याय–52, श्लोक–13–16।*
5. *वही, श्लोक–17।*
6. *वही, अध्याय–34, श्लोक–13 । '' वाह्लिकाश्चापरे शूरा राजानः सर्व्व एव ते''।*
7. *क्वाइन्स ऑफ एन्सियंट इण्डिया–पृष्ठ–76*
8. *ई0जे0 रैप्सन– इण्यिन क्वाइंस– पृष्ठ–15।*
9. *एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द–8 पृष्ठ–44–47।*
   द्रष्टव्य :– प्रो0 श्रीराम गोपाल–प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह–खण्ड–1, पृष्ठ–324।
10. *यह मुद्रा स्टीफन कार को लुधियाना के निकट मिली थी।*
    द्रष्टब्य–प्रोसीडिंग्स ऑफ एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल–1884 पृष्ठ–138–39
11. *कार्पस इन्स्क्रप्शनम् इन्डिकेरम् जिल्द–3 पृष्ठ–14।*
12. *डॉ. आर0सी0 मजूमदार–प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृष्ठ–258*
13. *इण्डियन एन्टिक्वेरी–1913 पृष्ठ–200।*
14. *आर्क्योलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, जिल्द 6, पृष्ठ–162।*
    द्रष्टव्य–डॉ0 आर0सी0 मजूमदार–प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृष्ठ–260।
15. *वही*
16. *बाम्बे गजेटियर, जिल्द, 1 पृष्ठ–28।*
    ई0जे0 रैप्सन, आन्ध्र क्वाइंस, भूमिका, पृष्ठ–56
17. *पी.एल.गुप्ता, भारत के पूर्वकालिक सिक्के, पृष्ठ–168।*
18. *वही–पृष्ठ–168।*
19. *जर्नल ऑफ रायल एशियाटिक सोसाइटी–1897, पृष्ठ–886*
20. *ई.जे. रैप्सन–इण्डियन क्वाइंस– पृष्ठ–11*
21. *आर्कियोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, जिल्द–14 पृष्ठ–134*
22. *डॉ. आर0सी0 मजूमदार–प्राचीन भारत में संघटित जीवन– पृष्ठ–266–67*
23. *पी0एल0 गुप्ता, भारत क पूर्व कालिक सिक्के, पृष्ठ–164*
24. *वही, पृष्ठ–164–65*
25. *कनिंघम, क्वाइंस ऑफ एन्सिएंट इण्डिया, पृष्ठ–70*
26. *प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृष्ठ–266–267*
27. *हर्षचरित, कावेल द्वारा अनुदित, पृष्ठ–193,*
28. *प्राचीन भारत में संघटित जीवन– पृष्ठ–268,*
29. *प्रो. श्रीराम गोयल–मागध–सातवाहन–कुषाण साम्राज्यों का युग,– पृष्ठ–609*